IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Dr Sharmila rani
HOD sociology
Tantiya university sri Ganganagar

OM PRAKASH DHAMU
Research scholar
Tantiya university sri ganganagar

सारांशरूप

वर्तमान में वैश्विक परिपेक्ष्य से सोशल मीडिया का गत 20 वर्षों से तीव्र गति से विकास हुआ है। सोशल मीडिया ने सभी को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। इससे कोई भी वर्ग अछूता नहीं रहा है। 1990 के दशक में इसका प्रारंभ हुआ था। 30 जून 2010 से विश्व भर में सोशल मीडिया के दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। सोशल मीडिया का सर्वाधिक प्रभाव विशेषतौर पर युवाओं पर स्पष्ट देखा जा सकता है। सोशल मीडिया का अर्थ पारस्परिक संबंधों के लिए अंतर्जाल या अन्य माध्यमों द्वारा निर्मित आभासी समूह से है। यह एक दूसरे के मध्य संवाद विचारों की अभिव्यक्ति का आदानप्रदान करने का एक साधन है। सोशल मीडिया के प्रभाव से कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो सोशल मीडिया से वंचित हो। वर्तमान समय में सोशल मीडिया का उपयोग बड़े स्तर पर स्थापित होने के कारण लगभग 60 प्रतिशत से अधिक उपभोक्ता इससे जुड़े हुए है। युवा वर्ग खाली समय अधिकांशतरू सोशल मीडिय का उपयोग करते हैं। सोशल मीडिया के प्रसार ने दिन प्रतिदिन जीवन में बढ़ते उपयोग ने विशेषतरू युवाओं को अत्यधिक प्रभावित किया है। सोशल मीडिया द्वारा सही उपयोग किया जाए तो बहुत ही वैश्विक परिदृश्य की जानकारी घर बैठे आसानी से ही ज्ञात हो जाती है एवं ज्ञानवर्धक की जानकारी प्राप्त कर ली जाती है, लेकिन सोशल मीडिया पर प्रायरू देखा जाता है कि भ्रामक जानकारी आदि से विशेषतरू युवा वर्ग दिग्भ्रमित हो जाते हैं, जिसके कारण सोशल मीडिया के नकारात्मक पहलू भी उभरकर मनोरोग के रूप में सामने आ रहे हैं।

प्रारंभिक जानकारीरूदृ

सोशल मीडिया का शाब्दिक अर्थ है कि पारस्परिक संबंध के लिए अंतर्जाल या अन्य माध्यमों द्वारा निर्मित आभासी समूह से है। यह व्यक्तियों व समुदाय को साझा सहयोगी बनाने का माध्यम है। सोशल मीडिया

एक ऐसा माध्यम है जो समानांतर माध्यमों से पृथक है। सोशल मीडिया में पहुंच,आवृत्ति, ताजगी प्रयोज्य और स्थायित्व का आदि तत्व शामिल हैं। सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रचार व उपयोग प्राथमिकता व गर्व का विमाय बन गया है।

डॉक्टर प्रज्ञेश कुमार मिश्र 2008 ने कहा है कि "सोशल मीडिया पर अच्छी जानकारीयों एवं चीजें परोसने से युवाओं में आपराधिक प्रवृत्ति रुकेगी। व सोशल मीडिया का साइट इफेक्ट भी नहीं पड़ेगा।"

अन्द्रेस काप्लान एवं मिशेल हेन लेन (2009) के अनुसार, सोशल मीडिया इंटरनेट आधारित अनुप्रयोग का समूह है, जो 2.0के सिद्धांत पर वैचारिक व तकनीकी रूप से निर्मित है। एवं इनके उपयोगकर्ताओं का कंटेंट के निर्माण में विचारों के आदान प्रदान करने की अनुमति प्रदान करता है। सोशल मीडिया के प्रयोग ने युवाओं को समय से पूर्व आक्रांत कर लिया है। आज, युवा वर्ग अपनी पहचान तुरंतबनाना चाहता है, बिना इंतजार के प्रतिमिठत होने की इच्छा सदैव बनी रहती है। और जब इच्छाएं पूर्ण नही होती है तो वे आक्रामक एवं आपराधिक गतिविधियों में शामिल होकर किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करते है।

सोशल मीडिया मोबाइल वेब आधारित प्रौ4ोगिकी से ऐसे क्रियाशील मंचों का निर्माण करता है जिनके माध्यम से व्यक्ति समुदाय पर योग्यता जनित सामग्री का संप्रेमाण एवं सह सर्जन कर सकते हैं। उस पर विचार विमर्श कर सकते हैं एवं उनका परिमकार कर सकते हैं। सोशल मीडिया, सामाजिक नेटवर्किंग, सोशल साइटस के उपयोगकर्ताओं को विचार विमर्श, सर्जन सहयोग करने व टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो, वीडियो के रूप में जानकारी में भागीदारी करने में उसे परिमकृत करने की योग्यता एवं सुविधा प्रदान करता है। आज सूचना तकनीक क्रांति में सोशल मीडिया के अनेक प्लेटफामों मोबाइल स्मार्टफोन,टैबलेट

द्वारा फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, यूट्यूब, एक्स हेंडल आदि उपयोगकर्ताओं में एक प्रत्याशित वृद्धि हो रही है। इंटरनेट की उपलब्धता ने वास्तविक समाजीकरण में तात्कालिकता की भावना में कई गुणों में वृद्धि हुई है।

सोशल मीडिया तक पहुंच कायम करने के लिए अधिकाधिक लोग स्मार्टफोन व टैबलेट्स का उपयोग कर रहे हैं। अधिक कनेक्टिविटी के साथ उपभोक्ताओं को मूव सोशल मीडिया के उपयोग की स्वतंत्रता भी मिल रही है।

स्वर्ण सुमन के शब्दों में "सोशल मीडिया, तकनीकी और सामाजिक व्यवहार का संलयन है"। सोशल मीडिया का युवा वर्ग में सोशल नेटवर्किंग के प्रति रुझान बढता ही जा रहा है।

जेम्ल एल मोर्टन(2011) ने सोशल मीडिया के प्रमुख तत्वों के आधार पर परिभामित करते हुए बताया है कि जब कोई सोशल मीडिया

की परिभामा का परीक्षण करें ता निम्नलिखित मानदंड उभरकर सामन आत हैं।

'इंटरनेट आधारित (इंटरनट एक आयोजक अभिकर्ता है,पर संचार व्यनिगत होता है।)

'यूजर जनरटेड व प्रकाशित करना।

'कम्यूनिटी शेयरिंग जैस पोस्ट, टिप्पणियां, फाइल शेयरिंग, सामुदायिक हित।

'मल्टीमीडिया ēलॉग,पाक पोस्ट, वीडियो, फोटो, फोरम, इंटरनट, मैसेजिंग,टेक्सटिंग ।

'तत्कालिक सोशल मीडिया से सामग्री प्रकाशित करने में कम समय ट्विटर या इंटरनट मैसेजिंग कम समय में संभव है।

'भौगोलिक Şमिट से सिकुड़ना।

'पुरानी एवं नई इटरनेट प्रौधोगिकी का समाविमट करना।

सोशल मीडिया क अध्ययन क उद्देश्य

इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया से युवाओं पर पड़न वाले प्रभाव का जानना और ज्ञात करना कि आज के युवाओं द्वारा सोशल नेटवर्क का उपयोग किस रूप में लिया जा रहा ह एवं सोशल मीडिया का युवाओं पर किस प्रकार स प्रभाव पड़ रहा ह जिनक निम्न उद्देश्य है।

1. 'सोशल मीडिया द्वारा युवाओं में सांस्कृतिक प्रतिमानों के प्रति ज्ञान प्राप्त करना।
2. 'सोशल मीडिया का प्रभाव युवाओं का आर्थिक क्षेत्रों स लेनदेन की प्रक्रिया का ज्ञात करना।
3. 'युवाओं में सोशल मीडिया द्वारा धार्मिक क्रियाकलापा का पता लगाना।
4. 'युवाओं पर बदलत मनोरंजनात्मक साधनों की जानकारी सोशल मीडिया द्वारा ज्ञात करना।
5. 'युवाओं के राजनीतिक, समाजीकरण व राजनीति क प्रति अभिमुखीकरण में सोशल मीडिया की भूमिका को ज्ञात करना।
6. 'सोशल मीडिया के सदुपयोग तथा उसकी महता से युवाओं को सुझाव दना।
7. 'सोशल मीडिया जहां सकारात्मकता उत्पन्न करता है, वहीं युवाओं में इसके नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

प्राकल्पना (हाइपोथिसिस)

प्राकल्पना का शाब्दिक अर्थ ह कि यह अनुसंधान का दसरा स्तम्भ है। इसमे किसी समस्या क विश्लेमाण व परिभामित करण के पश्चात उसमें कारणों तथा कार्य कारण संबंध में पूर्व चिंतन कर लिया गया है। समस्या का कारण स्पमट होन के पश्चात उसका परीक्षण प्रारंभ होता है। सोशल मीडिया का युवाओं पर पड़न वाले प्रभावों का पूर्वानुमान लगाकर अध्ययन करना है। पीएच मन(मेथड ऑफ सोशियोलॉजिकल इन्क्वायरी) परिभामित किया ह "कि प्राक्कल्पना एक अस्थायी अनुमान है"।

जी ए लुण्डबग(सोशल रिसर्च में) परिभामित करत हैं कि "प्राकल्पना एक कामचलाऊ सामान्यीकरण हैं जिनकी सत्यता की परीक्षा अभी बाकी है।"

गुड्डे व हाट (मेथड इन सोशल रिसर्च) प्राकल्पना का परिभामित करत हुए बताया कि "प्राक्कल्पना सिद्धांत व अनुसंधान के बीच एक आवश्यक कड़ी ह जा अतिरिन ज्ञान की खोज में सहायक हात हैं"। **अनुसंधान विधि**

प्रस्तत शोध अध्ययन में अनुसंधान की प्रमुख विधियों में स साक्षात्कार, अनुसूची, निर्दशन एवं अवलोकन विधि का प्रयोग लिया गया है। साक्षात्कार अनुसूची द्वारा सोशल मीडिया का युवाआ पर पड़न वाले प्रभाव की सूचना अनुसूची द्वारा प्रत्यक्ष वि4ार्थियों का साक्षात्कार द्वारा। तथ्या का एकत्रित किया जाता है। अनुसूची तथ्य संकलन की एक प्रमुख विधि ह जा विमाय से सबंधित लिखित प्रश्ना की सची जिसम शोधकर्ता द्वारा उत्तरदाता के पास जाकर उसकी प्रत्यक्ष उपस्थिति में साक्षात्कार व अवलोकन की सहयत

द्वारा नियंत्रण करत हुए प्रश्ना को पूछकर स्वयं शोधकर्ता द्वारा उत्तरों को अनुसूची द्वारा भरा जाता है। साक्षात्कार विधि भी शोध की एक प्रमुख विधि ह क्याकि इसम शोधकर्ता को आमने सामन बैठ कर उत्तर प्रति उत्तर कर अवलोकन व अनुसूची विधि क द्वारा परस्पर वार्तालाप द्वारा विमाय स संबंधित तथ्य एकत्रित किया जाता है। साक्षात्कार विधि द्वारा प्रत्यक्ष 'टना का अवलोकन। यह विधि सस्ती सरल विधि है। इसमे त्रुटियां कम होने की संभावना हाती है और इसका प्रयोग शिक्षित व अशिक्षित को शामिल कर

एक साथ कई व्यनियों की मनोवृत्तियाँ, संवेग, अनुभव कार्य करन, न करन, विमाय के बारे में आमन सामन की स्थिति में विचारा का जानकर सही एवं सटीक तथ्या का प्राप्त करन का प्रयास किया जाता ह ताकि शोध कार्य क विश्वसनीयता बनी रहे।

निमकर्मा

सोशल मीडिया न युवा वर्ग का प्रभावित कर युवाआ के विकास हत एक नया व बेहतर मंच प्रदान किया है। जिसे तीव्र गति स और कम समय में सोशल मीडिया नटवर्क का विकास हुआ है। इतना तीव्र गति से विश्व का कोइ भी विकास नही दखा गया। यह एक आधुनिक युग की तकनीकी क्रांति है। इसी कारण ऐसे युग का सूचना के क्रांति का युग के नाम से जाना जाता है। इस सोशल मीडिया का प्रभाव

युवाआ पर अत्यधिक दखन का मिलता है। सोशल मीडिया की अनेक परिभामाएं हैं, लेकिन मुख्य बात

यह है कि सोशल मीडिया में इंटरनट आधारित एप्लीकेशन का उपयोग होता है। जा इसके उपयोगकर्ताआ का वस्त के निर्माण व आपस में आदान प्रदान करन की सुविधा प्रदान करता है। सोशल मीडिया नटवक में फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, एक सैंडल, गूगल प्लस, वॉट्सऐप, टेलीग्राम आदि नेटवर्किंग साइट्स जिसपर बिलियन युवा अपन विचारा का आदान प्रदान करत हैं, ये एक आभासी समूह का निर्माण करता है। सोशल मीडिया में वैसे ता हर क्षेत्र का प्रभावित किया है, लेकिन युवाआ के साथ समाज का भी बहुत प्रभावित किया है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, मनोरंजनात्मक, धार्मिक, पारिवारिक एव सामाजिक संबंधा को। सोशल मीडिया ने बहुत प्रभावित किया है। सोशल मीडिया युवाआ की पहुंच में हर समय रहन के कारण सोशल नटवर्किंग साइट्स के माध्यम स युवा अपने करियर के कौशल नित नये विकल्प चुन रह हैं। सोशल मीडिया ने जब दश विदेश में महामारी कोरोना कोविड 19 फैली ता दश दुनिया की हर 'टना का ज्ञात करान में अपनी महती भूमिका निभायी व लोगों में जागरूकता पैदा कर इस महामारी के बार में जानकारी प्रदान कर कुछ हद तक अकुश लगा। सोशल मीडिया का कोविड 19 में शिक्षा के क्षेत्र में, शिक्षा में अनेक नवाचार निभान की भूमिका का निर्वाह किया। 'र बैठे बैठे ऑनलाइन शिक्षण कार्य, विभिन राज्यों की सरकार व केंद्र सरकार द्वारा जनहित की योजनाआ की जानकारी का आदान प्रदान कर लोगों का जागरूक कर लोगों में

जागरूकता उत्पन्न की हैं। लोकतंत्र में भी सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा सोशल मीडिया क सहार विभिन्न प्लेटफामं पर प्रचार प्रसार करना। आर्थिक लेनदन सामाजिक धार्मिककार्यक्रमं की सूचनाएं देश दुनिया की समसामयिक 'ाटनाओं की जानकारी पहुंचाने में सोशल मीडिया बहुत मददगार साबित हुआ है। सोशल मीडिया द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन प्लेटफाम उपलēध कराकर युवा वि4ार्थियों का स्वर्गीण विकास में बहुत योगदान मिला है। सोशल मीडिया का सही सदुपयोग होने पर सोशल मीडिया पर आसपास, दश विदेश की हर 'ाटना की सही एवं सटीक स्चनाए प्राप्त हो जाती है। लोगं में जागरूकता, ज्ञान में वृद्धि, नित्य नए आविमकार, सूचना तकनीक क्रान्ति का ही परिणाम है। सोशल मीडिया सामाजिक संबंधों के निर्माण में बहुत कारगर रहे। इसके प्लेटफॉर्म फेसबुक,एक्स हेडल वॉट्सऐप, टलीगाम, इंस्टाग्राम आदि के द्वारा जा 'ार लावारिस, लापता ,अपहरण, अनेक दु'ाटना आदि 'ाटित होने पर सोशल मीडिया पर आग की तरह वायरल होने स्न सोशल मीडिया के द्वारा लोगं का सही जानकारी मिल जाती है। सोशल मीडिया। बिछड़ हुए का एक दसरे का जोड़ने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है। जहा इसका सकारात्मक प्रभाव देखन का मिलता है। वही सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभावयुवाओं का भ्रामक जानकारी द्वारा दिग्भ्रमित कर रहा है, जिसके कारण अनेक प्रकार की 'ाटनाएं हिंसक 'ाटना, उत्तेजक भामाण, उपद्रव, आगजनी। अपराध, साइबर अपराध आदि गतिविधियों में शामिल होकर। सामाजिक का सामाजिक वातावरण दूमित कर देते हैं।

स्दर्भ सूची

''मोहन,सुमित मीडिया लेखन, नई दिल्ली,वाणी प्रकाशन 2007 ।

''दबे,दिवाकर, सोशल मीडिया एक्टिविज्मरूएक राजनीतिक हथियार,नई दिल्ली,साहित्य भूमि 2019।

''जोशी,सालिनी, नया मीडिया अध्ययन और अभ्यास,गुड़गांवरू पिग्विन इंडिया प्रकाशन 2015।

''राजस्थान जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, राजस्थान विश्ववि4ालय, जयपुर वॉल्यूम 12 अक्टबर 2020 पेज 56

'.परमतज .वतह,संतोमा, नरुका सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव वॉल्यूम छह इश्यू जनवरी 2018।

'.चंजतपां.बवउ

'.कंपदपाईींत.बवउ

''हिंद जागरण।

''सीमा संदश।

''बजाज,पूनम, सोशल मीडिया का युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव, 17.9.2019,राजस्थान जर्नल ऑफ सोशोलॉजी 2020,वॉल्यूम 14।

''मीना मीनाक्षी वर्तमान समय में। युवाओं में सोशल मीडिया का प्रभाव एक समाजशास्त्रीय हृदय राजस्थान जनरल ऑफ सोशलॉजी 2020 वॉल्यूम 14

''बजाज,पूनम ,2021 कोरोना काल में युवा पीढ़ी और सोशल मीडिया, राजस्थान जनरल ऑफ सोशियोलॉजी, वॉल्यूम 13।